بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 14 फ़रवरी 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

खैबर के युद्ध के परिपेक्ष में
सीरत-ए-नबवी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-14.02.2025

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- खैबर के युद्ध का वर्णन हो रहा था, अब खैबर के दूसरे क़िले पर विजय का वर्णन करूंगा। यह दूसरा क़िला सअब बिन मआज़ का क़िला कहलाता है। इस क़िले में खैबर के अन्य समस्त क़िलों की तुलना में अधिक खाना, पशु तथा जीवन सामग्री थी और इसमें पाँच सौ योद्धा रहते थे। मुसलमानों ने इस क़िले का घेराव किये रखा, किन्तु सफलता न मिली। सहाबा रज़ी. ने रसूलुल्लाह स. की सेवा में उपस्थित होकर तेज़ भूख लगने की शिकायत की तो आप स. ने फ़रमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि मेरे पास कुछ भी नहीं है जिससे मैं आप लोगों की तृप्ति का प्रबन्ध कर सकूं, फिर आप स. ने यह दुआ की- ऐ अल्लाह! इनके अधिकार में दे दे जो खाने और चर्बी से भरा पड़ा है। इसके बाद कुछ सहबा रज़ी. और यहूदियों के बीच लड़ाई हुई जिसमें एक सहाबी ने एक यहूदी के सिर पर घोर आक्रमण किया और क़ौमी गर्व का नारा लगाया। इस पर सहाबा रज़ी. ने कहा कि इसका जहाद व्यर्थ हो गया, अर्थात जातिगत नारा लगा कर इसने जो घमंड किया और अपनी बड़ाई बयान की है, यह उचित नहीं। जब यह बात रसूलुल्लाह स. को पहुँची तो आप स. ने फ़रमाया- कोई बात नहीं, इसको अच्छा बदला मिलेगा और इसकी प्रशंसा भी की जाएगी, अभिप्रायः यह है कि ऐसे अवसर पर यदि कोई ऐसे बात कह दी जाए तो कोई बुरी बात नहीं।

हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह स. को देखा कि आप स. तीर चला रहे थे और आप स. का एक भी निशाना नहीं चूका और आप स. मेरी ओर देख

कर मुस्कुराए। हज़रत ख़बाब बिन मन्ज़र रज़ी. ने अपने जवानों के साथ क़िले में दाख़िल होकर घोर युद्ध किया और अंततः क़िला जीत लिया और सामान पर क़ब्ज़ा कर लिया। रसूलुल्लाह स. के मनादी करने वाले ने घोषणा की, कि ख़ुद भी खाओ और अपने मवेशियों को भी खिलाओ, परन्तु उठाकर कुछ मत ले जाना।

इसके बाद तीसरे क़िले, जिसका नाम क़िला ज़ुबैर है उसपर विजय का वर्णन है। जब यहूदी सअब तथा नाअम नामक क़िलों से निकल कर जुबैर के क़िले की ओर भागे तो रसूलुल्लाह स. ने उनका घेराव किया। यह क़िला पहाड़ की चोटी पर था, आप स. ने तीन दिन तक इस क़िले को घेर कर रखा और सफलता न मिली। एक यहूदी ने उपस्थित होकर शरण दिए जाने की शर्त पर निवेदन किया कि यदि आप इस तरह एक महीने भी इनका घेराव किए रखें तो इन्हें कोई चिन्ता नहीं होगी, इनकी ज़मीन के नीचे गुफाएं हैं, ये रात को निकलते हैं पानी लाते हैं और अपने अपने क़िलों की ओर निकल जाते हैं। यदि आप इनके पानी का रास्ता काट दें तो ये हथियार डाल देंगे। रसूलुल्लाह स. ने उनके पानी का रास्ता बंद कर दिया, जब पानी का रास्ता कट गया तो वे बाहर निकल आए और घोर रक्तपात आरम्भ हो गया। उस दिन मुसलमानों में से कुछ सहाबा शहीद हो गए और यहूदियों में से दस आदमी मारे गए और आप स. ने विजय पाई तथा इसके बाद रसूलुल्लाह स. शक़ नामक क़िलों की ओर प्रस्थान कर गए।

यहाँ यहूदी सरदार सलाम बिन मशकम के मारे जाने का भी वर्णन मिलता है। इतिहास में उल्लेख है कि यह बीमार था और इसी कारण से लड़ाई में भाग नहीं ले रहा था, इसके साथियों ने इसे सुझाव दिया था कि वह कहीं और चला जाए, परन्तु इसने वह सुझाव नहीं माना तथा अन्ततः वह मुसलमानों के हाथों मारा गया। हुज़ूर ए अनवर ने फ़रमाया कि यदि उसकी बीमारी की बात सच भी हो, और वह युद्ध में सक्रिय भागीदार भी नहीं था तो भी उसकी हत्या इस दृष्टि से आपत्ति जनक नहीं कि अपनी सेना को युद्ध में भेजने के लिए उसने ही तैयार की थी तथा उसकी देख रेख भी कर रहा होगा, तो इस बीच लड़ाई के वातावरण में किसी सहाबी ने उसे भी मार डाला। सेना के सरदार का अति महत्त्व होता है और सरदार के मरने से सेना मनोबल खो देती है, अतः इस दृष्टि से उसकी हत्या आपत्ति जनक नहीं।

शक़ नामक क़िला दो क़िलों का जोड़ था। सबसे पहले आप स. ने उबी नामक क़िले की ओर ध्यान दिया और एक पहाड़ी पर खड़े होकर आप स. ने क़िले वालों से युद्ध किया। आरम्भ में दो लोग आमने सामने लड़ने के लिए आए। हज़रत ख़बाब बिन मन्ज़र रज़ी. और हजश वालों में से एक व्यक्ति, और अबू दजाना रज़ी. ने मुसलमानों की ओर से मुक़ाबला किया। इस मुक़ाबले में मुसलमानों की सफलता पर यहूदी मुक़ाबले से बोखला गए, इस पर मुसलमान आगे बढ़े तथा क़िले पर आक्रमण कर दिया। यहूदियों ने मुसलमानों पर अत्यधिक तीर बरसाए, मुसलमानों ने भी जवाब में तीर बरसाए, परन्तु यहूदी चूंकि ऊपर बुर्जों से मुसलमानों पर तीर बरसाते थे इसलिए मुसलमानों को इस हमले में हानि उठानी पड़ी। ऐसा लगता है यहूदी विशेषतः उस भाग को निशाना बनाना चाहते थे जहाँ हुज़ूर स. पड़ाव किये हुए थे। रसूलुल्लाह स. सहाबा रज़ी. के साथ मौजूद थे कि एक

तीर आप स. के कपड़ों में आकर लगा। एक रिवायत में है कि आप स. उस तीर के लगने से ज़ख़्मी हुए और इस पर आप स. ने एक मुट्ठी कंकड़ों की ली और उन पर फेंक दी जिससे उनका क़िला हिलने लगा यहाँ तक कि मुसलमानों ने यहूदियों को पकड़ लिया।

इसके बाद तीन अन्य क़िलों का मुसलमानों ने घेराव किया और उन्हें जीत लिया। इन क़िलों में क़मूस नामक क़िला विशेष रूप से सुदृढ़ क़िला था। रसूलुल्लाह स. ने चौदह दिनों तक इनका घेराव किया और फिर आप स. ने निश्चय किया कि यहूदियों पर मन्जनीक़ लगाई जाए अर्थात तोप के द्वारा पत्थर फेंका जाए। यहूदियों को जब इस प्रकार अपने विनाश की आशंका हो गई तो उन्होंने रसूलुल्लाह स. से सन्धि करना स्वीकार कर लिया। यहूदियों के इस प्रस्ताव पर मुसलमानों के साथ यहूदियों के हथियार डालने का एक समझौता हो गया। इस समझौते में नबी करीम स. ने यहूदियों के साथ अत्यन्त विनम्र व्यवहार किया। सही बुख़ारी की रिवायत के अनुसार नबी करीम स. ने खैबर यहूदियों को ही दे दिया कि वे इस पर काम करें, वहाँ खेतीबाड़ी करें और उनके लिए आधा भाग होगा जो कुछ वहाँ पैदा हो। खैबर में 17 सहाबी शहीद हुए।

इतिहास एवं जीवन परिचय की पुस्तकों में उल्लेख है कि खैबर पर विजय पाने के बाद जब मुसलमानों तथा यहूदियों में समझौता हो गया तो लोग कनाना और उसके भाई रबीअ को रसूलुल्लाह स. के पास लेकर आए। कनाना पूरे खैबर का सरदार था और हज़रत सफ़ीय्या रज़ी. का पति था और रबीअ इसका चचेरा भाई था। कनाना के पास यहूदी क़बीले बनू नज़ीर के सरदार हयी बिन अखतब का खज़ाना था जिसमें सोने चांदी इत्यादि के गहने थे। रसूलुल्लाह स. ने इन दोनों से उस खज़ाने के विषय में पूछताछ की, इन दोनों ने इन्कार किया। रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि यदि तुम दोनों ने मुझसे कुछ छिपाया तथा बाद में वह प्रकट हो गया तो तुम पर अल्लाह और उसके रसूल का कोई दायित्व नहीं होगा। इतिहास एवं सीरत की पुस्तकों के अनुसार रसूलुल्लाह स. ने इसके बाद एक सहाबी को कुछ निशानियाँ बताकर भेजा और वह सहाबी यह खज़ाना ले आए जिसका मूल्य दस हज़ार दीनार लगाया गया, तथा कनाना और रबीअ दोनों की हत्या कर दी गई। कुछ रिवायतों में कनाना को चक़माक़ के पत्थरों से आग दिए जाने का भी वर्णन है।

हुज़ूरे अनवर ने इस घटना की विभिन्न रिवायतों को बयान करने के बाद इनकी सामूहिक विवेचना करते हुए इस घटना को सत्य के विरद्ध और रसूलुल्लाह स. की रहमत के विपरीत कहा। फ़रमाया- यहाँ भी आपत्ति करने वालों ने इसलाम और आँहज़रत स. के आलोकिक अस्तित्व पर आरोप लगाए हैं, मानो आप स. को धन सम्पत्ति का लालच था। फिर यह भी दिखाना चाहा कि आप स. नऊज़ुबिल्लाह किस किस तरह के अत्याचार करने में भी संकोच नहीं करते थे। आप स. का जीवन तो खुली किताब की भाँती है। आप स. तो लड़ाई से पहले यह हिदायत देते कि किसी बच्चे, किसी महिला की हत्या नहीं करनी, यहां तक कि किसी वृक्ष को भी अकारण न काटा जाए। जो पशुओं को भी कष्ट में नहीं देख सकते, वे मनुष्यों पर कैसे अत्याचा कर सकते हैं? इसी तरह विजय प्राप्त करके धन बटोरने के उद्देश्य युद्ध करना भी आप स. पर एक निराधार आपत्ति है। खैबर तो वह युद्ध था कि जिस पर रवाना होने से पहले ही आप स. ने यह घोषणा फ़रमा दी थी

कि जो धन सम्पत्ति के लालच में युद्ध पर जाना चाहता है, वह हमारे साथ न आए। जिस नबी स. का आचरण यह हो उसके सम्बन्ध में यदि ऐसी कोई रिवायत सामने आए तो न्यायसंगत होगा कि उसे ध्यान पूर्वक देखा जाए, उसकी उचित व्याख्या और सत्य कारणों के अनुरूप विचार करने का प्रयास किया जाए। आप स. जो न्याय एवं संवेदना मूर्ति और न्यायप्रिय थे, आप स. की ज़ात के साथ इस प्रकार की बात जोड़ना किसी तरह न्यायसंगत नहीं है।

हुज़ूरे अनवर ने पाश्चात्य विद्वानों की आपत्तियों पर रिवायतों की भीतरी गवाही को सम्मुख रखते हुए आलोचना की और इन वास्तविकता के विरद्ध रिवायतों का ग़लत होना साबित फ़रमाया। अल्लामा शिबली नुमानी ने इस रिवायत को अति मिथ्या रिवायत कहा है। इसी तरह कनाना के वध का यह कारण बताया है कि उसने महमूद बिन मसलमा रज़ी. की हत्या की थी और रसूलुल्लाह स. के निर्देश पर मुहम्मद बिन मसलमा ने अपने भाई महमूद की हत्या का बदला लेने के लिए कनाना को मारा।

वर्तमान युग के एक अहमदी लेखक सय्यद बरकात अहमद साहब अपनी पुस्तक रसूल ए अकरम स. और यहूदे हिजाज़ में लिखते हैं कि इब्ने इस्हाक़ ने बिना किसी प्रमाण के यह घटना बयान की है, पहले तो दण्ड, तथा वह भी आग में डालने का दंड, इसलाम की शिक्षा के विरुद्ध है। दूसरे यह कि पूरे खैबर की धन सम्पत्ति के आवंटन में इस खज़ाने को बांटने का कहीं किसी रिवायत में वर्णन नहीं मिलता, न ही इस ख़ज़ाने के बैतुलमाल में जमा किए जाने की कोई रिवायत मिलती है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- अतएव यह है मूल वास्तविकता, ये घटनाएँ आगे चल रही हैं, यहाँ इन्हीं घटनाओं में एक यहूदी महिला का वर्णन भी है जिसने आँहज़रत स. को विष देने का प्रयत्न किया तथा आप स. के विरुद्ध षड्यंत्र किया, परन्तु अल्लाह तआला ने आप स. को सुरक्षित रखा, यह क्यूँकि एक लम्बी घटना है, इसका विस्तारण इंशाल्लाह आइंदह।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने मुकर्रम मास्टर मंसूर अहमद साहब काहलों आफ़ आस्ट्रेलिया इब्ने मुकर्रम शरीफ़ अहमद साहब काहलों का सदवर्णन और जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा और दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131